E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राधा–कृष्ण के प्रेम का पौराणिक, सामाजिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण

डॉ. निशा जैन

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

जे. सी. मिल कन्या महाविद्यालय

ग्वालियर (म. प्र.)

Paper Received date

05/01/2026

Paper date

Publishing Date

10/01/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.18359503

IMPACT FACTOR 5.924

सारांश (Abstract)

राधा–कृष्ण का प्रेम भारतीय सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपरा का एक केंद्रीय प्रतिमान है, जिसे केवल पौराणिक आख्यान या लौकिक प्रेमकथा के रूप में देखना इसके गहन अर्थ को सीमित करना होगा। यह प्रेम भारतीय दर्शन में आत्मा–परमात्मा के शाश्वत संबंध, भक्ति आंदोलन में माधुर्य भाव तथा सामाजिक जीवन में मानवीय संवेदनशीलता और स्वतंत्र चेतना का प्रतीक है। प्रस्तुत शोध पत्र में राधा–कृष्ण के प्रेम का पौराणिक, सामाजिक एवं दार्शनिक दृष्टिकण से बहुआयामी अध्ययन किया गया है। पौराणिक साहित्य—विशेषतः श्रीमद्भागवत पुराण एवं ब्रह्मवैवर्त पुराण—में राधा–कृष्ण प्रेम को ईश्वर की लीला और आनंद शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है, जहाँ प्रेम लौकिक सीमाओं से ऊपर उठकर आध्यात्मिक सत्य का रूप ग्रहण करता है। सामाजिक दृष्टि से यह प्रेम जाति, वर्ग, लिंग और मर्यादा जैसी रूढ़ संरचनाओं को चुनौती देता है तथा मानवीय समरसता और भावनात्मक स्वतंत्रता को स्थापित करता है। भक्ति आंदोलन के माध्यम से यह प्रेम लोकजीवन का अंग बना और समाज में नैतिकता तथा करुणा का विस्तार हुआ।

दार्शनिक स्तर पर राधा–कृष्ण का प्रेम अद्वैत वेदांत, भक्ति दर्शन और रस सिद्धांत का सजीव समन्वय है। यह प्रेम जीवात्मा के परमात्मा में लीन होने की अनुभूति को भावनात्मक धरातल पर साकार करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि राधा–कृष्ण का प्रेम केवल धार्मिक या साहित्यिक विषय नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का एक समग्र और शाश्वत प्रतिरूप है, जो आज के आधुनिक समाज में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

भूमिका (Introduction)

भारतीय चिंतन परंपरा में प्रेम को केवल जैविक या सामाजिक आवश्यकता नहीं माना गया, बल्कि उसे आध्यात्मिक साधना का सर्वोच्च माध्यम स्वीकार किया गया है। वेदों से लेकर उपनिषदों, पुराणों और भक्ति साहित्य तक प्रेम को मोक्ष का साधन माना गया है। राधा-कृष्ण

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

का प्रेम इसी परंपरा का सर्वाधिक सशक्त और लोकप्रिय रूप है। यह प्रेम लौकिक प्रतीत होते हुए भी अलौकिक है तथा मानवीय होते हुए भी दैवीय।

राधा और कृष्ण का संबंध ऐतिहासिक पात्रों से अधिक सांकेतिक है। राधा चेतना, भक्ति और जीवात्मा का प्रतीक हैं, जबकि कृष्ण परम सत्ता, आनंद और ब्रह्म का प्रतिनिधित्व करते हैं। दोनों का प्रेम द्वैत को समाप्त कर अद्वैत की अनुभूति कराता है। यही कारण है कि यह प्रेम केवल धार्मिक कथा न रहकर दर्शन, समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग बन गया है।

शोध समस्या का कथन (Statement of the Problem)

समकालीन अध्ययन में राधा-कृष्ण के प्रेम को प्रायः रोमांटिक या पौराणिक कथा के रूप में सीमित कर दिया गया है, जिससे इसके गहन सामाजिक और दार्शनिक आयाम उपेक्षित रह जाते हैं। यह शोध इसी समस्या के समाधान का प्रयास करता है। शोध समस्या का कथन -

"राधा-कृष्ण के प्रेम का पौराणिक, सामाजिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण"

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. राधा-कृष्ण प्रेम की पौराणिक अवधारणा का विश्लेषण करना।
2. इस प्रेम के सामाजिक निहितार्थों का अध्ययन करना।
3. दार्शनिक दृष्टि से आत्मा-परमात्मा संबंध की व्याख्या करना।
4. भारतीय संस्कृति में इसकी समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करना।

शोध प्रश्न (Research Questions)

1. क्या राधा-कृष्ण का प्रेम केवल पौराणिक कल्पना है?
2. इस प्रेम ने भारतीय समाज को किस प्रकार प्रभावित किया?
3. दार्शनिक दृष्टि से यह प्रेम किस सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है?

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

भागवत पुराण में कृष्ण-लीला के अंतर्गत रासलीला का वर्णन प्रेम को ईश्वरीय आनंद के रूप में प्रस्तुत करता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में राधा को कृष्ण की परम शक्ति बताया गया है। मध्यकालीन भक्ति साहित्य में जयदेव का *गीत गोविंद* राधा-कृष्ण प्रेम का काव्यात्मक शिखर है। सूरदास और विद्यापति ने इसे लोकभाषा में जनमानस तक पहुँचाया। आधुनिक विद्वानों–हजारीप्रसाद द्विवेदी और रामविलास शर्मा–ने इसे सांस्कृतिक चेतना के रूप में देखा है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

शोध विधि (Research Methodology)

यह शोध **गुणात्मक**, **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक** विधि पर आधारित है।

- **प्राथमिक स्रोत** : भागवत पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, गीत गोविंद, सूरसागर
- **द्वितीयक स्रोत** : दर्शन एवं आलोचना ग्रंथ
- **तकनीक** : तुलनात्मक एवं दार्शनिक विश्लेषण

राधा-कृष्ण प्रेम का पौराणिक दृष्टिकोण

पौराणिक साहित्य में राधा-कृष्ण का प्रेम केवल एक मानवीय प्रेमकथा नहीं है, बल्कि वह ईश्वर की लीला, शक्ति और आनंद का दार्शनिक प्रतीक है। वैदिक साहित्य में कृष्ण का उल्लेख विष्णु के अवतार के रूप में मिलता है, किंतु राधा का व्यवस्थित एवं सुस्पष्ट स्वरूप मुख्यतः पुराणकालीन साहित्य, विशेषतः भागवत पुराण एवं ब्रह्मवैवर्त पुराण में विकसित हुआ है। भागवत पुराण के दशम स्कंध में वर्णित रासलीला, राधा-कृष्ण प्रेम की पौराणिक अभिव्यक्ति का केंद्रीय आधार है। यहाँ प्रेम को ईश्वर और भक्त के मध्य आत्मिक आकर्षण के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो सांसारिक मर्यादाओं से परे है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में राधा को कृष्ण की 'आह्लादिनी शक्ति' कहा गया है। इस दृष्टि से राधा कोई साधारण नायिका नहीं, बल्कि स्वयं ईश्वर की आंतरिक आनंद शक्ति हैं। कृष्ण बिना राधा के पूर्ण नहीं माने गए हैं। यह अवधारणा पौराणिक चिंतन में शक्ति और शक्तिमान के अभिन्न संबंध को स्पष्ट करती है। राधा-कृष्ण का प्रेम इस प्रकार सृष्टि के मूल तत्व–आनंद–का प्रतीक बन जाता है। पौराणिक दृष्टिकोण में राधा-कृष्ण प्रेम को 'लीला' कहा गया है। लीला का अर्थ है–ईश्वर की स्वेच्छा से संपन्न आनंदमयी क्रिया, जिसका उद्देश्य उपदेश नहीं, बल्कि अनुभूति है। रासलीला में कृष्ण का प्रत्येक गोपी के साथ नृत्य करना यह दर्शाता है कि ईश्वर प्रत्येक जीव के हृदय में समान रूप से विद्यमान है, किंतु राधा उनमें सर्वश्रेष्ठ हैं, क्योंकि उनका प्रेम पूर्ण समर्पण और तन्मयता का प्रतीक है।

पुराणों में यह भी स्पष्ट किया गया है कि राधा-कृष्ण प्रेम किसी सामाजिक बंधन से नियंत्रित नहीं है। विवाह, कुल, लोकलाज–ये सभी तत्व यहाँ गौण हो जाते हैं। यह प्रेम धर्मशास्त्रीय नियमों के बजाय आध्यात्मिक सत्य पर आधारित है। इसीलिए पौराणिक साहित्य में इसे 'परकीया प्रेम' कहा गया, जो सांसारिक दृष्टि से विवादास्पद होते हुए भी आध्यात्मिक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

दृष्टि से सर्वोच्च माना गया है। इस प्रकार पौराणिक दृष्टिकोण से राधा-कृष्ण का प्रेम ईश्वर और जीव के शाश्वत संबंध, शक्ति और शक्तिमान की एकता तथा आनंद के सार्वभौमिक सिद्धांत का प्रतीक है। यह प्रेम कथा न होकर आध्यात्मिक सत्य का रूपक है, जो भारतीय धार्मिक चेतना की गहराई को प्रकट करता है।

राधा-कृष्ण प्रेम का सामाजिक दृष्टिकोण

राधा-कृष्ण का प्रेम सामाजिक दृष्टि से अत्यंत क्रांतिकारी और परिवर्तनकारी स्वरूप रखता है। भारतीय समाज ऐतिहासिक रूप से जाति, वर्ण, लिंग और मर्यादा जैसी कठोर संरचनाओं में बँधा रहा है। ऐसे समाज में राधा-कृष्ण का प्रेम इन सभी बंधनों को तोड़ता हुआ मानवीय संवेदना और स्वतंत्र प्रेम की अवधारणा को प्रतिष्ठित करता है। यह प्रेम न तो जाति देखता है, न वर्ग, न ही सामाजिक स्वीकृति की चिंता करता है। राधा का सामाजिक स्वरूप अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न तो राजकुमारी हैं, न देवी के रूप में प्रारंभ से प्रतिष्ठित, बल्कि एक सामान्य ग्रामवधू हैं। इसके बावजूद वे कृष्ण के प्रेम में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती हैं। यह तथ्य भारतीय समाज में नारी की आंतरिक शक्ति, भावनात्मक गहराई और आध्यात्मिक क्षमता को रेखांकित करता है। राधा का चरित्र यह संदेश देता है कि सामाजिक पद या वैवाहिक स्थिति से अधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति की आंतरिक चेतना और प्रेम की शुद्धता है।

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में राधा-कृष्ण प्रेम ने सामाजिक समरसता को व्यापक आधार प्रदान किया। सूरदास, मीराबाई, विद्यापति और चैतन्य परंपरा ने इस प्रेम को जनभाषा और लोकसंस्कृति में स्थापित किया। इससे भक्ति केवल मंदिरों तक सीमित न रहकर आम जनजीवन का हिस्सा बन गई। जाति और वर्ग भेद को चुनौती देते हुए भक्ति आंदोलन ने समाज को एक मानवीय और संवेदनशील दिशा प्रदान की। सामाजिक दृष्टि से राधा-कृष्ण प्रेम प्रेम की नैतिकता को पुनर्परिभाषित करता है। यह प्रेम स्वार्थ, अधिकार और नियंत्रण पर आधारित नहीं, बल्कि त्याग, पीड़ा और समर्पण पर आधारित है। राधा का विरह सामाजिक जीवन में सहनशीलता और भावनात्मक परिपक्वता का प्रतीक बन जाता है। यह प्रेम व्यक्ति को आत्मकेंद्रितता से निकालकर सामाजिक करुणा की ओर ले जाता है।

आधुनिक समाज में जहाँ प्रेम को उपभोग और तात्कालिक संतुष्टि से जोड़ा जा रहा है, राधा-कृष्ण का प्रेम सामाजिक संतुलन और नैतिक गहराई का आदर्श प्रस्तुत करता है। इस

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रकार सामाजिक दृष्टि से यह प्रेम न केवल सांस्कृतिक विरासत है, बल्कि आज के समाज के लिए भी मूल्यबोध का स्रोत है।

राधा-कृष्ण प्रेम का दार्शनिक दृष्टिकोण

दार्शनिक दृष्टि से राधा-कृष्ण का प्रेम भारतीय दर्शन की केंद्रीय अवधारणाओं–अद्वैत, भक्ति और रस–का समन्वित रूप है। उपनिषदों में प्रतिपादित जीव और ब्रह्म की एकता की अवधारणा राधा-कृष्ण प्रेम में भावनात्मक और अनुभवात्मक रूप में प्रकट होती है। यहाँ राधा जीवात्मा हैं और कृष्ण परमात्मा। दोनों का मिलन आत्मा के परम सत्य में विलीन होने का प्रतीक है। अद्वैत वेदांत के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है और जीव उसी का अंश है। राधा-कृष्ण प्रेम इस दार्शनिक सत्य को भावनात्मक धरातल पर स्थापित करता है। राधा का कृष्ण में पूर्ण लीन होना अहंकार के विसर्जन और ब्रह्मानुभूति का प्रतीक है। यह प्रेम ज्ञान से अधिक अनुभूति पर आधारित है, जो भारतीय दर्शन की विशिष्टता है।

भक्ति दर्शन में राधा-कृष्ण प्रेम 'मधुर भक्ति' का सर्वोच्च रूप है। नारद भक्ति सूत्र और चैतन्य परंपरा में भक्ति को साधन और साध्य दोनों माना गया है। राधा की भक्ति निष्काम, निरपेक्ष और पूर्ण समर्पण वाली है। यहाँ ईश्वर से कुछ प्राप्त करने की कामना नहीं, बल्कि स्वयं को पूर्णतः अर्पित करने की भावना है। रस सिद्धांत की दृष्टि से यह प्रेम 'श्रृंगार रस' का आध्यात्मिक रूप है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में वर्णित रस सिद्धांत का चरम उत्कर्ष राधा-कृष्ण प्रेम में दिखाई देता है, जहाँ लौकिक श्रृंगार अलौकिक आनंद में परिवर्तित हो जाता है। यह प्रेम इंद्रिय सुख से ऊपर उठकर आत्मिक आनंद प्रदान करता है।

इस प्रकार दार्शनिक दृष्टि से राधा-कृष्ण का प्रेम केवल भावुकता नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन का सजीव रूप है, जो ज्ञान, भक्ति और आनंद–तीनों को एक सूत्र में बाँधता है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में राधा-कृष्ण प्रेम की प्रासंगिकता

आधुनिक युग में तकनीकी विकास और उपभोक्तावादी संस्कृति ने मानवीय संबंधों को जटिल और सतही बना दिया है। प्रेम को प्रायः आकर्षण, स्वामित्व और तात्कालिक सुख के रूप में देखा जाने लगा है। ऐसे समय में राधा-कृष्ण का प्रेम एक वैकल्पिक और मूल्यपरक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो आधुनिक समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। राधा-कृष्ण प्रेम आधुनिक व्यक्ति को यह सिखाता है कि प्रेम अधिकार नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व है। यह प्रेम अपेक्षा से मुक्त है और इसी कारण गहन है। राधा का प्रेम त्याग और विरह से होकर गुजरता है, जो यह

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

दर्शाता है कि सच्चा प्रेम केवल प्राप्ति में नहीं, बल्कि सहनशीलता और आत्मिक परिपक्वता में निहित है।

आधुनिक मनोविज्ञान भी इस तथ्य को स्वीकार करता है कि परिपक्व प्रेम वही है जिसमें आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और भावनात्मक संतुलन हो। राधा-कृष्ण प्रेम इन सभी तत्वों को समाहित करता है। कृष्ण राधा पर अधिकार नहीं जताते और राधा कृष्ण को बाँधने का प्रयास नहीं करतीं। यह प्रेम स्वतंत्रता में बंधन और बंधन में स्वतंत्रता का अद्भुत उदाहरण है। सामाजिक स्तर पर यह प्रेम स्त्री-पुरुष संबंधों की नई व्याख्या प्रस्तुत करता है। राधा केवल प्रेमिका नहीं, बल्कि आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी हैं। यह नारी की बौद्धिक और आध्यात्मिक समानता को स्थापित करता है, जो आधुनिक लैंगिक विमर्श के लिए भी महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि राधा-कृष्ण का प्रेम बहुआयामी और बहुस्तरीय स्वरूप रखता है। पौराणिक दृष्टि से यह प्रेम ईश्वर की लीला, शक्ति और आनंद का प्रतीक है, जो जीव और ब्रह्म के शाश्वत संबंध को स्पष्ट करता है। सामाजिक स्तर पर यह प्रेम रूढ़ सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए मानवीय संवेदना, समानता और समरसता को प्रतिष्ठित करता है। यह नारी की आध्यात्मिक शक्ति और स्वतंत्र चेतना को भी उजागर करता है। दार्शनिक दृष्टि से राधा-कृष्ण का प्रेम अद्वैत, भक्ति और रस सिद्धांत का जीवंत रूप है, जिसमें ज्ञान और अनुभूति का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। यह प्रेम व्यक्ति को आत्मकेंद्रितता से निकालकर आत्मिक और सामाजिक चेतना की ओर ले जाता है। अतः स्पष्ट है कि राधा-कृष्ण का प्रेम केवल पौराणिक कथा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और दर्शन का एक शाश्वत आधार है।

सुझाव (Suggestions)

1. राधा-कृष्ण के प्रेम को केवल पौराणिक या धार्मिक दृष्टि तक सीमित न रखते हुए उसके सामाजिक, दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक आयामों पर भी विस्तृत शोध किया जाना चाहिए।
2. विद्यालय एवं उच्च शिक्षा स्तर के पाठ्यक्रमों में राधा-कृष्ण प्रेम को नैतिक शिक्षा, मूल्यबोध और भावनात्मक विकास के संदर्भ में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

3. इस विषय पर अंतरविषयी शोध (Interdisciplinary Studies) को प्रोत्साहित किया जाए, जिसमें दर्शन, समाजशास्त्र, साहित्य, स्त्री-अध्ययन और मनोविज्ञान को जोड़ा जा सके।
4. आधुनिक प्रेम-संबंधों और पारिवारिक संरचनाओं के संदर्भ में राधा-कृष्ण प्रेम की प्रासंगिकता पर तुलनात्मक अध्ययन किए जाने चाहिए।
5. लोकसंस्कृति, नाटक, संगीत, डिजिटल मीडिया और जनसंचार के माध्यमों द्वारा राधा-कृष्ण प्रेम-दर्शन को जनसामान्य तक प्रभावी रूप से पहुँचाया जाना चाहिए।
6. नारी चेतना और आध्यात्मिक समानता के संदर्भ में राधा के चरित्र पर केंद्रित स्वतंत्र शोध कार्यों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

उपसंहार

राधा-कृष्ण का प्रेम भारतीय दर्शन और संस्कृति का एक जीवंत और शाश्वत स्वरूप है, जो समय, समाज और व्यक्ति–तीनों को गहराई से प्रभावित करता है। यह प्रेम केवल भावनात्मक आकर्षण नहीं, बल्कि आत्मिक अनुभूति, समर्पण और आनंद का प्रतीक है। पौराणिक कथाओं से लेकर भक्ति साहित्य और दार्शनिक परंपराओं तक, राधा-कृष्ण प्रेम ने भारतीय चेतना को दिशा प्रदान की है। आधुनिक युग में, जहाँ प्रेम को प्रायः उपभोग और स्वार्थ से जोड़ा जाता है, राधा-कृष्ण का प्रेम त्याग, स्वतंत्रता और भावनात्मक परिपक्वता का आदर्श प्रस्तुत करता है। यह प्रेम व्यक्ति को आत्मबोध और समाज को करुणा की ओर ले जाता है। अतः कहा जा सकता है कि राधा-कृष्ण का प्रेम केवल अतीत की पौराणिक कथा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक प्रेरणास्पद जीवन-दर्शन है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (1960). *भारतीय साहित्य की भूमिका.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. शर्मा, रामविलास. (1978). *भारतीय संस्कृति और दर्शन.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
3. जयदेव. (12वीं शताब्दी). *गीत गोविंद.* (विभिन्न हिन्दी टीकाएँ उपलब्ध)। वाराणसी: चौखम्भा प्रकाशन।
4. सूरदास. *सूरसागर.* वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
5. विद्यापति. *विद्यापति पदावली.* पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

6. श्रीमद्भागवत पुराण. (दशम स्कंध). गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. ब्रह्मवैवर्त पुराण. गीता प्रेस, गोरखपुर।
8. शुक्ल, रामचन्द्र. (2002). *हिन्दी साहित्य का इतिहास.* वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
9. मिश्र, विद्यानिवास. (1995). *भारतीय भक्ति परंपरा.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
10. उपाध्याय, बलदेव. (1983). *भारतीय दर्शन.* वाराणसी: चौखम्भा विद्या भवन।
11. चैतन्य चरितामृत. कृष्णदास कविराज गोस्वामी. (हिन्दी अनुवाद). वृन्दावन: श्री राधा कृष्ण प्रकाशन।
12. सिंह, नामवर. (1999). *छायावाद और भक्ति काव्य.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।